नयी कविता : नये मनुष्य की अवधारणा

डॉ० निकहत परवीन

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, जे.जे. कॉलेज, झुमरी तिलैया, कोडरमा, झारखण्ड

शोध-सार

हिन्दी-साहित्य में नयी कविता, कविता का नवोन्मेष है जो पूर्व के वादों एवं उनकी कविताओं से अलग एक नई सोच और नया दृष्टिकोण लेकर आगे बढ़ती है। नयी कविता का आधुनिकताबोध, व्यापक जीवनदृष्टि, मानवतावादी विचार तथा व्यक्त की अस्मिता का प्रश्न इसे विशेष बनाती है तथा नयी कविता की यही विशेषता 'नये मनुष्य' अथवा 'लघु मानव' के अस्तित्व का निर्माण करती है। यह 'नया मनुष्य' एक सामान्य मानव है किन्तु अपेक्षित जीवन के बावजूद उसमें जीवन के प्रति आस्था है और अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने का साहस है। व्यक्ति की स्वतंत्रता के पक्षधर नयी कविता के रचनाकारों के समक्ष व्यक्ति का ऐसा रूप है जो अपनी लघुता को लिए हुए अपने लघु परिवेश में भी खुद की अस्मिता, स्वतंत्रता, आत्मसम्मान और अस्तित्व के प्रति जागरूक और संघर्षशील है एवं उसमें रूढ़िगत चेतना के प्रति छपपटाहट और विरोध है। यह नया 'मनुष्य' समाज की समस्त मानवता के हित में परिवर्तित करके नया रूप देने के लिए कृतसंकल्प, मनुष्य को मनुष्य मानने वाला, प्रत्येक व्यक्ति के सम्मान और स्वाभिमान के प्रति सजग एवं विवेक सम्पन्न है। इन्हीं संवेदनाओं एवं वैचारिक, दृष्टिकोण के साथ समाज को एक नयी दिशा देने वाला व्यक्ति 'नया मनुष्य या 'लघु मानव' है जिसकी स्थापना कविता में नयी कविता रचनाकारों ने की है।

शब्द कुँजी- काव्य-नव्यता, आधुनिकताबोध, अस्मिता का प्रश्न, लघुमानव, आत्मसंघर्ष

केन्द्र-बिन्दु- काव्य-नव्यता, आधुनिकताबोध, अस्मिता का प्रश्न, लघुमानव, आत्मसंघर्ष नयी कविता हिन्दी साहित्य श्रृंखला की सशक्त एवं जीवन्त प्रक्रिया है। प्रगतिवाद मार्क्सवाद से प्रेरित होकर हिन्दी साहित्य में स्थापित हुआ और प्रयोगवाद वैचारिक चेतना पर आधारित है किन्तु नयी कविता विशुद्ध काव्य-भूमि की नवीनता की उपज है। धर्मवीर भारती जी ने नयी कविता को पुराने और नये मानव-मूल्यों के टकराव से उत्पन्न तनाव की कविता कहा है। कथ्य तो मानव जीवन के सर्वांग में विद्यमान है इसे केवल शोषित वर्ग में या वैयक्तिक कुण्ठा, निराशा में खोजना इसे सीमित कर देता है। नयी कविता में कथ्य की व्यापकता उसे विशेष बना देती है। डॉ0 रामदरश मिश्र ने इस संदर्भ में लिखा है -

इस प्रकार नयी कविता की सबसे बड़ी विशेषता है कथ्य की व्यापकता। यह कोई वाद नहीं है,यह व्यापक जीवन दृष्टि है। कथ्य कहाँ नहीं है? प्रगतिवाद और प्रयोगवाद ने कथ्य को बाँट लिया था, किन्तु नयी कविता ने मानव को उसके समग्र परिवेश में सही रूप में अंकित करना चाहा है। नयी कविता की दृष्टि मानवतावादी है, किन्तु यह मानवतावाद मिथ्या आदर्शों पर आधारित नहीं है बल्कि यथार्थ की तीखी चेतना, अपने परिवेश से जुड़े मनुष्य के बौद्धिक प्रयासों और उसकी संवेदना के उलझे हुए नाना स्तरों तक अनुभूति और चिन्तन दोनों दिशाओं में पहुँचने के चेष्टाओं पर अवलंबित है। इसने छोटे-बड़े का भेद नहीं रखा, छोटी- बड़ी अनुभूतियों, सत्यों, क्षणों स्थितियों, घटनाओं और दृश्यों का बनावटी अन्तर नहीं स्थापित किया।"

युगानुरूप नयी कविता के कवि पूर्ववर्ती काव्यों की अपेक्षा भाव, भाषा, संवेदना और शिल्प में नवीनता के प्रति आग्रही रहे हैं। नयी कविता व्यक्ति की स्वतंत्रता की बात करती है - मानसिक गुलामी से आजाद होने का आवाहन करती है। नयी कविता आन्दोलन के दौरान नये कवियों ने 'नये मनुष्य' की प्रतिष्ठा पर बल दिया, जो मध्य-वर्ग का ही प्रतिनिधि था और व्यक्ति-स्वातन्त्रय का प्रबल पक्षधर था। नयी कविता के सशक्त कवि डॉ0 जगदीश गुप्त ने 'नये मनुष्य' की कल्पना पर गहराई से विचार किया है। प्रख्यात समीक्षक लक्ष्मीकान्त वर्मा ने 'नये मनुष्य' को 'लघु मानव' नाम दिया। 'लघु मानव' या नया मनुष्य' वह सामान्य मानव है जो अपनी संवेदनाओं भूख-प्यास आदि को लिये हुए अपेक्षित जीवन जीने को मजबूर है किन्तु फिर भी अपने आपको संजोता हुआ अपने अस्तित्व को

तलाशता है। उदाहरणस्वरूप धर्मवीर भारती को ये पंक्तियाँ हम देख सकते हैं -

मैं रथ का टूटा पहिया हूँ
लेकिन मुझे फेंक मत
इतिहासों की सामूहिक गति
सहसा झूठी पड़ जाने पर
क्या जाने
सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले।

वास्तव में मानव-व्यक्तित्व के प्रति प्रगाढ़ आस्था और उसका असीम सामर्थ्य में विश्वास ही नयी कविता को विशेष बनाते हैं। व्यक्ति की स्वतन्त्रता के पक्षधर नयी कविता के रचनाकार के समक्ष व्यक्ति का ऐसा रूप है जो अपनी लघुता को लिए हुए अपेन लघु परिवेश में भी सतत् गतिशीलता के साथ अपने विचारो में अपना अस्तित्व जीवित रखे हुए हैं। श्री लक्ष्मीकांत वर्मा मानव-विराटता से अधिक महत्व उस लघुता को प्रदान करते हैं जो अपनी अस्मिता, अस्तित्व और स्वतन्त्रता के प्रति जागरूक है। वह सामाजिक व्यवस्था और परम्परा जो समकालीन परिवेश में उपयुक्त नहीं है, उनके प्रति वह व्यक्ति कुंठित है और ऐसी किसी भी व्यवस्था के प्रति विद्रोही है। श्रीलक्ष्मीकान्त वर्मा ने इस बो में कहा है -

"जब हम मनुष्य को मनुष्य के रूप में ग्रहण करने की चेष्टा करेंगे तो निश्चय ही हमारी दृष्टि में सुपरमैन' या 'अधिनायक' का रूप न आकार उस व्यक्ति का रूप आयेगा जो अपनी लघुता को लिए हुए अपने लघु परिवेश में सतत् गतिशीलता के साथ अपनी दृष्टि और वाणी में आज भी अपने प्रति आस्था जीवित रखे हुए है।"

अत: श्री वर्मा इस बात को स्पष्ट करते हैं कि इस नये मनुष्य का भावबोध किसी पूर्व निश्चित वाद, नियति या मान्यता से बँधा हुआ नहीं है। उसके भावबोध में आधुनिकताबोध है जो रूढ़ियों और संकीर्ण परम्पराओ का विरोध करती है और नयी कविता के नयी इसी आधुनिक विचारों को मान्यता देते हैं। नयी कविता आन्दोलन के प्रबल स्तंभ कवि एवं समीक्षक डॅ0 जगदीश गुप्त ने 'नये मनुष्य' के रूप में आधुनिकता बोध द्वारा व्यक्ति की अस्मिता का प्रश्न उठाया है। अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक 'नयी कविता : स्वरूप और समस्याएँ' में इन्हीं प्रश्नों को व्याख्यायित किया है -"आधुनिकता का अर्थ मेरे निकट पुरातन को गाली देना नहीं है बल्कि सारग्राहिणी तत्व-दृष्टि के साथ विगत सांस्कृतिक समृद्धि को आत्मसात करते हुए मानव की वर्तमान नियति एवं उसके भावी विकास के प्रति अपने दायित्व का विशिष्ट और सक्रिय अनुभव करना है।"

अर्थात नयी कविता में मानवताहीन धारणाओं के प्रति गहरा विरोध है जिसकी सशक्त अभिव्यक्ति जगदीश गुप्त के काव्य-संग्रह 'शम्बूक' में हुई है -

"जो व्यवस्था
व्यक्ति के सत्कर्म को थी
मान ले अपराध
फूल को खिलने न दे
निर्बाध जे व्यवस्था
वर्ग-सीमित स्वार्थ से
हो ग्रस्त
वह विषय
घातक व्यवस्था
शीघ्र ही हो अस्त।"

निश्चित ही डॉ0 जगदीश गुप्त की यह रचना उसी 'नये मनुष्य' की परिकल्पना है जो अव्यावहारिक आधिपत्य को स्वीकार करने से मना कर देता है। 'नये मनुष्य' अथवा 'लघु मानव का परिवेश विवेक की मर्यादा एवं कौशल से प्रशास्ति होता है इसमें ऐसे व्यक्ति की छवि है जो आपने स्वतंत्र अस्तित्व की स्थापना के लिए प्रयत्नशील है और दोषपूर्ण नीतियों से टकराने का साहस करता हुआ जीवन के प्रति पूर्ण रूप से जागरूक है। नयी कविता के सशक्त हस्ताक्षर विजयदेव नारायण साही ने 'नयी कविता' अंक 5 एवं 6 में 'लघुमानव के बहाने हिन्दी कविता पर क बहस' लेख प्रस्तुत किया जिसमें 'लघु' और महत् के सम्बन्ध में व्यापकता से विचार किया है। श्री शाही ने इस बारे में लिखा है -

"लघु मानव के प्रति एक आपत्ति यह है कि यह मनुष्य की महत्ता या महानता का निषेध करती है। मनुष्य का जो सर्वश्रेष्ठ है, सबसे विराट है, उससे हमारे सम्बन्ध को तोड़ देती है। मुझे उसमें शाब्दिक चमत्कार अधिक दिखाई देता है और तत्व कम क्योंकि सत्य यही है कि लघु-महत् में वैसी दुश्मनी नहीं है जैसा कि शब्दकोष बतलाता है। इस संबंध में मैं प्रसाद जी की सूक्ष्म दृष्टि का हवाला दूँगा जहाँ उन्होंने 'यथार्थ' को 'लघु' से और ''आदर्श' को 'महत्' से सम्बद्ध किया है तथा यथार्थ और आदर्श दोनों को समन्वित दृष्टि से देखने का प्रयास किया है। लघु और महत् दोनों ही वैसे ही मिलते हैं जैसे यथार्थ और आदर्श।"

अत: विजयदेव नारायण शाही की दृष्टि में लघुमानव आदर्श और यथार्थ की अनुभूति का समन्वय है। जीवन

को यथार्थ और आदर्श से सम्पृक्त करने के कारण ही नयी कविता में आधुनिकता एवं मानवतावादी दृष्टिकोण का प्रधान्य रहा है तथा नये मनुष्य की स्थापना इसी के धरातल पर हुई है। उदाहरण के तौर पर डॉ0 जगदीश गुप्त की 'गोपा-गौतम' संवाद काव्य की इन पंक्तियों को देखा जा सकता है जिसमें उन्होंने नये मनुष्य के दर्पण के सम्मुख गोपा को एक आधुनिक नारी के रूप में रखा है तथा उसके अस्तित्व, स्वतंत्रता एवं अधिकार की प्रश्न उठाया है -

"आप से ही पूछती हूँ
नारी से कितना समर्पण चाहते हैं आप?
आपकी व्यवस्था ने
नर के लिए सारे अधिकार रचे
खोले सभी रास्ते।
बाँधने को घर की परिसीमा में
सारे कर्तव्य बने नारी के वास्ते।
हन्त् ! हन्त!
अपने पराये का इतना भाव?"

अर्थात् अपनी अस्मिता को लेकर एक सजग नारी गोपा का पति गौतम से क्रूर व्यवस्था को लेकर किया गया यह प्रश्न एक नये समाज के निर्माण की आहट है जिसकी नयी कविता के कवियों ने 'नये मनुष्य' के रूप में परिकल्पना की है। नयी कविता नयेपन के आग्रह के कारण ही पूर्व की कविताओं से भिन्न है। यही कारण है कि पहले से निर्धारित सिद्धान्त इसके उपयुक्त प्रतीत नहीं होते। डॉ0 जगदीश गुप्त ने 'लघुमानव' को धारणा पर गहन विचार किया है।

विदित है कि नयी कविता मानव के व्यक्तित्व के प्रति गहन आस्था रखती है। यही कारण है कि नयी कविता में 'नये मनुष्य' का एक सहज, स्वतंत्र एवं अस्मितापूर्ण स्वरूप निर्मित हुआ इसे डॉ0 जगदीश गुप्त ने इस प्रकार शब्दबद्ध किया है।

नया मनुष्य रूढ़िगत चेतना से मुक्त, मानव-मूल्यों के रूप में स्वतंत्रता के प्रति सजग, अपने भीतर अनारोपित सामाजिक दायित्व को स्वयं अनुभव करने वाला, समाज को समस्त मानवता के हित में परिवर्तित करके नया रूप देने के लिए कृतसंकल्प, कुटिल स्वार्थ भावना से विरत, मानव-मात्र के प्रति स्वाभाविक सहअनुभूति से युक्त, संकीर्णताओं एवं कृत्रिम विभाजनों के प्रति क्षोभ का अनुभव करने वाला, मानव व्यक्तित्व को अपेक्षित, निरर्थक और नगण्य सिद्ध करने वाली किसी भी दैविक शक्ति या राजनैतिक सत्त के आगे अनवरत्, मनुष्य की अन्तरंग सद्वृति के प्रति आस्थावान, प्रत्येक व्यक्ति के स्वाभिमान के प्रति सजग, दृढ़ एवं संगठित अन्तःकरण संयुक्त, सक्रिय किन्तु अपीड़क, सत्यनिष्ठ तथा विवेक सम्पन्न होगा।

उपर्युक्त विशेषताओं से युक्त मनुष्य को ही गुप्त ज ने 'नये मनुष्य' के रूप में तथा विजय देवनारायण साही और लक्ष्मीकांत वर्मा ने 'लघुमानव' के रूप में नयी कविता में स्थापित किया है जो काल्पनिक नहीं यथार्थ से परिपूर्ण है। लघुमानव एवं नये मनुष्य की मूलभूत विशेषतायें समान हैं, दोनों ही के लिए आत्मअस्तित्व सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।

निष्कर्षः

'नये' या 'नया' शब्द सदैव ही पूर्ववर्ती भाव, कला, दर्शन, संवेदना, व्यवस्था, परम्परा इत्यादि में कुछ बदलाव का आग्रही होता है। ये नई चेतना पुराने मूल्यों को ढहाती-गिराती नये मूल्यान्वेषण में तत्पर होती है। जो हिन्दी साहित्य में प्रयोगवादी छाया से अलग 'नयी कविता' को जन्म देती है। नयी कविता में एक ऐसे मनुष्य की कल्पना जो रूढ़िगत चेतना से मुक्त, स्वतंत्रता के प्रति सजग और अपने अस्तित्व के प्रति संघर्षशील है जिसे 'नया मनुष्य' या 'लघु-मानव' कहा गया। यह नया मनुष्य अपने भीतर अनारोपित सामाजिक दायित्व का स्वयं अनुभव करने वाला, समाज को समस्त मानवता के हित में परिवर्तित करके नया रूप देने के लिए कृतसंकल्प, हर मनुष्य को जन्मतः समान मानने वाला, प्रत्येक व्यक्ति के सम्मान एवं स्वाभिमान के प्रति सजग, सत्यनिष्ठ तथा विवेक सम्पन्न है। नयी कविता कवियों की संवेदना का स्तर ऐसे मनुष्य का निर्माण करता है। यह 'नया मनुष्य' या 'लघु-मानव' नयी कविता की नव्यता का द्योतक है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1. नयी कविता के प्रतिमान- श्री लक्ष्मीकांत वर्मा, पृ0-161
2. शम्बूक -डॉ0 जगदीश गुप्त, पृ0-45
3. नयी कविता : स्वरूप और समस्याएँ -डॉ0 जगदीश गुप्त, पृ0-20
4. नई कविता (खण्ड एक) लघु मानव के बहाने हिन्दी कविता पर एक बहस-विजयदेव नारायण साही। पृ0-185
5. हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास - डॉ0 कुसुम राय, पृ0-551
6. गोपा गौतम -डॉ0 जगदीश गुप्त, पृ0-83
7. नयी कविता : अंक-4, विजयदेव नारायण शाही एवं डॉ0 जगदीश गुप्त।